SUSHANT UNIVERSITY ORGANIZED INTERNATIONAL CONFERENCE ON
"ADVANCES IN MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNVOATION" ICAMRI-2023
ON 28-29TH OCTOBER 2023
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in October 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

मृणाल पाण्डे कृत 'एक स्त्री का विदागीत'कहानी संग्रह में नारी जीवन

शोधार्थि : कोमल हिंदी विभाग श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ ,राजस्थान–335801

प्रस्तावना

'एक स्त्री का विदागीत' नामक संकलन की कहानियां हमारे समय और खुद कलाकार की रचनात्मक शक्ति को आखिरी मूंद तक निहारकर, उससे वह अंतिम छान पाने की कोशिश करती है, जो प्रचार माध्यम की पकड़ से परे, कहानी कला का विशुद्ध रूप है।

'एक स्त्री का विदागीत' कहानी सावित्री नाम की एक विधवा स्त्री की है, जिसके चार बच्चे है। दो बेटे, दो बेटियां। बड़ा बेटा और बहू ने अपनी गृहस्थी बाहर बसा ली। वह अपने छोटे बेटे रमेश और बहू सुशमा के साथ रहती हैं। सुषमा एक कॉलेज में लेक्चरर है। उसके जाने के बाद सावित्री अकेली रह जाती है और घिसे–जीर्ण कपड़े की तरह गृहस्थी की पुरानी चादर अचानक फटकर हृदय मथ देने वाली यादों की झलक दिखलाती रहती हैं। कभी अपनी मंझले बेटे को, कभी शीशम के कुबड़े पेड़ को देखकर उसके पुराने रूप को याद करती है। वर्तमान में सब अपने काम धंधों में व्यस्त है, यह देखकर भी वह संतुष्ट रहती है– ''साफ सुथरी मांग–पट्टी करे मेहरिया और धुला–पुंछा घर भाग्यवान को ही नसीब होता है। गर्व से उसकी छाती फूल उठी तो क्या हुआ। अगर बड़ी बहू नौकरी करती है? जाने से पहले अपने हाथ का सब कुछ नहीं कर जाती? शीशे सा चमकता है घर। आगे–पीछे छोटा–मोटा नौकर चाकर है ही करने को। जिये, सब जिये फले–फूले, जटिलता, रहित, किसी भी तीखी चोट या उद्दाम आवेग से शून्य था। वैसे सुषमा नर्म दिल वाली थी, सड़क पर भागते बच्चों, गाड़ी वालों को पशुओं पर चाबुक चलाते देख द्रवित हो जाती थी पर सास का चेहरा देखते ही उसका द्रवणशील मन बर्फ का शिला बन जाता। अपना सारा गुस्सा ट्यूटोरियल में लड़कियों को चूस–चूसकर नम्बर देकर निकालती, नकरों से कठोरता से बोलती। बोलती कम थी पर भीतर ही भीतर नम्बर देकर निकालती, नौकरों से कठोरता से बोलती। बोलती कम थी पर भीतर ही भीतर सारा घर उससे थर्राता था। उसका पति रमेश भी उससे कन्नी काटता था, ''बीस साल के दाम्पत्य जीवन में उसे बखूबी सिखा दिया था कि ऐसे समय अपनी शहादत और आत्मदया की आंच में तपकर उसकी पत्नी की तरह कठोर और नुकीली बन जाती है। ठंडी इस्पाती, चमकदार और मर्म भेदी।''[1] बाद में सावित्री जब बीमार होती और उसे ऑप्रेशन के लिए जाया गया तो उसे एकमात्र यही चिंता थी कि वह अपने जेवर किसे बांटे लेकिन स्वपन में भटियारिन आकर उसे वास्तविक तथ्य से अवगत कराती कि सबको एक दिन जाना है, यह मोह छोड़ दे और इन सबसे निश्चिंत सावित्री गहरी नींद में सो जाती है।

दूसरी कहानी 'कुनू' एक ऐसी बच्ची की है जिसमें बचपन से लेकर किशोरावस्था तक बहुत परिवर्तन आता जो उसकी आदतों से झलकता। पहले कुनू आवाजों से अपने लिए लेटे–लेटे कुछ भी गढ़ती, समुद्र शेर की मांद, जंगल, घोड़ों की टापों का धमाकेदार हुजूम सब उसकी बचपन की यादें बन जाती है। अपनी प्रिय चट्टान पर चढ़कर हरी–भरी जमीन से मीलों दूर होती और खुशनुमा नीले आसमान से भी। तब वह जानती न थी कि इसी को खुशी कहते है। ज्यों–त्यों वह बड़ी हुई, ढ़ेरों प्रश्न उसके दिमाग में आने लगे। उसके बड़े होने का अहसास पल–पल मां उसे कराती। 'कुनू ने जब रात को बताया कि कच्ची पीने से एक बार में तीन लोग टुन्न हो सकते है तो मां के होंठ बड़ियों की तरह सिकुड़ गए थे और उन्होंने कहा था कि अब वह सयानी हो रही है, डेटग फ्रॉक पहनकर इधर–उधर डोलते फिरने की उसे कोई जरूरत नहीं।[2] कुछ दिन में सबके लिए सलवार कमीज सिलवा दी गई। मां ने उसे समय–बेसमय छूने से मना कर दिया। रात को खिड़कियां बंद रखने की हिदायत मां ने दे दी थी और उन सबने कुनू को एक बंद कमरें में रहने को मजबूर कर दिया। उसने सभी खिड़कियों के कांचों पर मोटे रंगीन कागज चिपका दिए। उसका कमरा मजबूत किला बन गया। मां के शब्दों में 'न कहीं आना, न जाना, न रिश्तेदारों, मेहमानों के आगे निकलना, इतना भी पढ़ता है भला कोई? बीमार पड़ जाएगी तू।'[3] कुछ दिनों बाद उसके घर एक

---

1 मृणाल पाण्डे, एक स्त्री का विदागीत, पृ.22
2 मृणाल पाण्डे, एक स्त्री का विदागीत, पृ.48
3 वहीं, पृ.51

मेहमान लड़का आया जिसने उसे कमरे की चारदिवरी से बाहर निकाला और वह खुद को उसकी तरफ आकर्षित हुआ पाती है। ''रात को लेटे–लेटे कुनू ने साफ महसूस किया कि लड़का भी सपने मे उसे देख रहा होगा।''[4] उसके जीवन में उस लड़के की प्यार भरी बर्फ पड़ने लगी और खुद को समझाने में लगी रही कि उसके जीवन में जो बदलावा आया है, उस सबके लिए वह उस लड़के की शुक्रगुजार रहेगी।

'जगह मिलने पर साईड दी जाएगी उर्फ 'तीसरी दुनिया की एक प्रेम कथा' इस कहानी में सात–आठ लड़कों का एक समहू है जिसमे श्याम अगुवा है जिसकी देह लम्बी, आवाज गरगराती, घनी दाढ़ी, एक का नाम विपिन, यानि वैप्सी। जो हरदम फुदकता रहता, बाल आंखे चमकाता परिवार के गड़े मुर्दे उखाड़ता रहता। उनके समूह में कई लड़कियां भी थी जो धौल–धप्पेबाजी में लडकों से आगे रहते, सिगरेट पीता, चांदी के मोटे जेवर पहनती। उसी समूह का एक लड़का ष्याम की बहन सुमित्रा जो इम्तिहान खत्म कर भाषा का डिप्लोमा कोर्स कर रही है – उसे न ही मन पसंद करता है। समूह में उसके आने से सबका मूढ़ हल्का–फुल्का हो जाता। उम्र उसकी सत्रह से अधिक नहीं होती और कलागजात के सितारों के समीप्य से उसकी निहाल खिलखिलाहटों से हम सब अपने कलाकारपने पर नए सिरे से निहाल हुए जाते थे।''[5] चलते हुए जब श्याम उसके बीच में होता तभी एक कारकरीब से गुजरती है तो उसका हाथ अचानक उठ जाता उसे बचाने को, उसे पीठ पर आश्वस्त थपथपी देने को। तब वह सोचता कि श्याम बेषक ताकतवर है, लेकिन इस भीड़ भरी राहों पर वह भी सुरक्षित नहीं, क्योंकि जगह मिलने पर ही उसे रास्ता मिलेगा, नहीं तो गाड़ियां उसे भी कुचल देगी। उसे अब हर समय सुमित्रा का ही ध्यान रहता। ''आज वह तकिये के गिलाफनुमा कोई चीज पहने थी। त्रुफों की नायिका सी निष्पाप–बेदाग, पर पापमय सम्भावनाओं से भरपूर।'[6] अंत में वह उसे छोड़कर पेरिस चली जाती है जहां सॉरबौन में उसे दाखिला मिल जाता है। सम्पूर्ण कहानी में एकतरफा प्यार ही दिखलाई देता है।

'लक्का सुन्नी' कहानी एक बच्ची 'अमृत' के ही इर्द–गिर्द घूमती है, जिसे उसकी नानी ही पालती है। अमृता की मां लिली जिद्द करके बाहर पढ़ने गई तो वहां बिना बताए एक नकारा बंगाली छोकरे से ब्याह कर लिया जो नषे की सुइयां लेता था। उन दिनों की ज्यादा बन न पायी। बाद में लिली की कैंसर से मौत हो चुकी थी। अमृता मां के प्यार के अभाव में पलती है और अपनी काल्पनिक दुनिया में लक्का थी और सुन्नी दो दोस्तों के साथ रहती थी। उसकी नानी इसी चिन्ता में रहती कि कहीं यह इसी तरह पागल न हो जाए तथा उसके बाद उसका पालन–पोशण कौन करेगा। अंत में जब उसके मामा वापिस आते है, तब भी वह अपनी दुनिया में रहती है।

''मैं भीतर सीढ़ी पर था, तो भीतर से आवाज आई, 'लक्का–सुन्नी मर गए।''

''अय? मेरा चेहरा षायद बेवकूफी भरे अचरण से पुत गया था।

''हां जी, लक्की ने सुन्नी को कंक्रीट मिक्सर में फेंक दिया और लक्का को एक टैक्सी ने पिच्चा दिया।''[7]

निष्कर्ष

'एक स्त्री का विदागीत' कहानी संकलन की कहानियां नारी की रचनात्मक शक्ति को चित्रित करने में सक्षम हैं।

---

4 वहीं, पृ.52
5 मृणाल पाण्डे, एक स्त्री का विदागीत, पृ.64
6 वहीं, पृ.66
7 मृणाल पाण्डे, एक स्त्री का दिवागीत, पृ.93